Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.gisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2024 GISRRJ | Volume 7 | Issue 2 | ISSN : 2582-0095

प्रतिमानाटकम् में श्रीराम का स्वरूप

राजेश कुमार मिश्र
शोध छात्र, हिन्दी विभाग, हण्डिया पी0जी0 कॉलेज, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश।
डॉ० प्रद्युम्न सिंह
सहायक आचार्य,हिन्दी विभाग, हण्डिया पी0जी0 कॉलेज, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश।

Article Info
Article History
Accepted : 25 March 2024
Published : 05 April 2024
Publication Issue :
Volume 7, Issue 2
March-April-2024
Page Number : 40-42

शोधसारांश– प्रतिमानाटकम् के राम मर्यादा पुरूषोत्तम, वीर, पराक्रमी, धैर्यशील, विनम्र, मातृ–पितृ भक्त, पत्नी व भ्रातृ प्रेमी, दीनों ब्राह्मणों के रक्षक, सदाचारी, सत्यवादी तथ्ज्ञा धर्मज्ञ, उदार मानवी संवेगों से परिपूर्ण हैं।

मुख्य शब्द– प्रतिमानाटकम्, मर्यादा, पुरुषोत्तम, पराक्रमी, धैर्यशील, विनम्र, सत्यवादी, सदाचारी।

संस्कृत वाङ्मय अपने उत्तम नाटक साहित्य के निमित्त भी जगद्–विख्यात है। नाटककारों में कालिदास, भास और भवभूति अप्रतिम अनमोल रत्न हैं। महाकवि कालिदास के पश्चात् हमारी सबसे अधिक श्रद्धा भास के प्रति है। भास न केवल अपनी भाव व्यंजना तथा सरसता के प्रतीक हैं, वरन् वे सरलता, भाषाधिपत्य तथा माधुर्य के हेतु भी अद्वितीय हैं। काव्य को मानवमात्र की दुर्बलता कहा जाय तो अत्युक्ति न होगी। यह उसे एकाएक झकझोर देता है, उसे कर्तव्यारूढ़ करता है। काव्य दो तरह का होता है श्रृव्य और दृश्य। नाटक दृश्य काव्य के अन्तर्गत आता है।

'काव्येषु नाटकं रम्यम्' के आधार पर यह कहा जा सकता है कि सहृदयों के चित्त पर सबसे अधिक प्रभाव डालने वाली रचना नाटक ही हो सकती है। रामचरित का आश्रय लेकर ही वाङ्मय की सुधाधारा अजस्र प्रवाहित होती रही है। अतः संस्कृत के प्राचीन और सुप्रसिद्ध नाटककार भास ने भी इस नाटक के कथानक में राम कथा का ही आश्रय लिया है, किन्तु उन्होंने अभिनय की सुविधा तथा रोचकता की दृष्टि से इसमें मूल–कथानक से यत्र–तत्र रंचमात्र परिवर्तन कर दिया है। वाल्मीकि रामायण के अयोध्याकाण्ड और अरण्य में वर्णित वृत्त ही वस्तुतः इस नाटक की आधारशिला हैं।

प्रतिभा के सात अंकों में भास की इति वृत्त कल्पना जिस नाटकीय घटनाचक्र की सृष्टि करती है। उसमें राम का स्वरूप इस प्रकार है–

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License.

श्री राम मातृ–पितृ भक्त हैं। उनकी अपनी यह भक्ति और श्रद्धा, जब कैकेयी द्वारा राज्याभिषेक रोक दिया जाता है उस समय परिलक्षित होती है–

यस्याः शक्रसमो भर्ता मया पुत्रवती च या।

फले कस्मिन् स्पृहा तस्या येनाकार्य करिष्यति।।[i]

अर्थात् जिसके इन्द्र तुल्य पति हैं, जो मुझ सरीखे पुत्र से पुत्रवती हैं, उसकी किस फल में इच्छा हो सकती है जिससे उस प्रकार कुकृत्य करेंगी।

राम की मातृ भक्ति उस समय पराकाष्ठा पर पहुँच जाती है। जब कंचुकी कैकेयी की निन्दा करने लगता है तो राम कहते हैं–

अतः परं न मातुः परिवादं श्रोतुमिच्छामि।

महाराजस्य वृतान्तस्तावदभिधीयताम्।।[ii]

अर्थात् मैं और अधिक माता की निन्दा नहीं सुनना चाहता महाराज का वृतान्त तो कहिए।

श्री राम पिता के सत्य की रक्षार्थ स्वयं, पत्नी सीता एवं लक्ष्मण के साथ वन गमन करते हैं। पिता की दयनीय अवस्था देखकर भी सत्य की रक्षा के लिए नहीं रूकते कंचुकी के रोकने पर वे कहते हैं–

गतेध्वस्मासु राजा नः शिरः स्थानानि पश्यतु।।''[iii]

अर्थात् अब हम लोगों के जाने पर महाराज हमारे प्रधान स्थानों को देखेंगे–

इसी प्रकार राम की अनन्य पितृ भक्ति एवं अनुराग दर्शनीय हैं–

फलानिदृष्टवा दर्भेषु स्वहस्तरचितानि चः।

स्मारितो वनवासं च तातस्तत्रापि रोदिति।।[iv]

अर्थात् हाँ कुश के ऊपर हमारे हाथ से दिये फल को देखकर पिताजी को हम सबके वनवास का स्मरण हो जायेगा। वे स्वर्ग में भी रोयेंगे।

राम अनन्य भ्रातृ–प्रेमी हैं। उनका भ्रातृ प्रेम प्रतिमानाटकम् में पग–पग पर दृष्टिगोचर हुआ है। जब लक्ष्मण क्रोधित होकर अपराधी (कैकेयी) को दण्ड देना चाहते हैं तो राम का भ्रातृ व मातृ–प्रेम स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है–

भरतो वा भवेत् राजा वर्ध या ननुं तत्समम्।

यदि ते अस्ति धनुः श्लाघा स राजा परिपाल्यताम्।।[v]

अर्थात् भरत राजा हों या मैं दोनों समान हैं। यदि तुम्हें धनुष पर गर्व है तो कोई भी राजा हो उसी की रक्षा करनी चाहिए।

इसी प्रकार भरत के पंचवटी में स्वर को पहचानकर राम का भ्रातृ स्नेह हिलोरें लेने लगता है–

कस्यासौ सदृशतरः स्वरः पितुर्मे

गाम्भीर्यात् परिभवतीति मेघनादं।

यः कुर्वन् मम हृदयस्य बन्धुशङ्कां

अर्थात् (हे लक्ष्मण) क्या मुझ में सत्य का अवलोकन करने वाले पिता पर धनुष उठाऊँ, क्या पूर्व प्रतिज्ञात अपने धन को अपनाने वाली माता पर बाण छोड़ूं अथवा निर्दोष अपने छोटे भाई भरत को मार दूँ, इन तीनों पापों में से तुम्हारे क्रोध को कौन सा पाप शान्त कर सकेगा?

(इनमें किसी पर भी शस्त्र उठाकर राम पाप मार्ग, पर अवतीर्ण नहीं होना चाहते हैं।)

श्री रामचन्द्र जी श्रृंगार प्रिय है। उनका पत्नी प्रेम दृष्टव्य है–

''तेन हि अलङ्क्रियताम्। अहमादर्श, धारियिष्ये।''[vi]

अच्छा तो अलंकार धारण कर लो। मैं दर्पण देता हूँ।

राम अनन्य पत्नी–प्रेमी हैं। वे सीता के कष्टों को देखकर दुखी हो उठते हैं। वे कहते हैं अरे। यह सीता है। हा। महान कष्ट।

योडस्याः करः श्राम्यति दर्पणेऽपि।

स नैति खेदं कलशं वहन्त्याः।

कष्टम् वनं स्त्रीजनसौकुमार्य

समं लताभिः कठिनी करोति।।[vii]

अर्थात् जो हाथ दर्पण उठाने में भी थक जाता था, आज वही घट उठाने से भी नहीं थकता है। दुःख है कि वन लताओं के साथ स्त्रियों की कोमलता को भी कठिनता से बदल देता है।

अतः प्रतिमानाटकम् के राम मर्यादा पुरूषोत्तम, वीर, पराक्रमी, धैर्यशील, विनम्र, मातृ–पितृ भक्त, पत्नी व भ्रातृ प्रेमी, दीनों ब्राह्मणों के रक्षक, सदाचारी, सत्यवादी तथ्ज्ञा धर्मज्ञ, उदार मानवी संवेगों से परिपूर्ण हैं।

सन्दर्भ सूची

[i]- प्रतिमानाटकम् टीकाकार–ललिता प्रसाद, अंक–1, श्लोक–61

[ii]- प्रतिमानाटकम् टीकाकार–ललिता प्रसाद, अंक–1, श्लोक–27

[iii]- प्रतिमानाटकम् टीकाकार–ललिता प्रसाद, अंक–1, श्लोक–16

[iv]- प्रतिमानाटकम् टीकाकार–ललिता प्रसाद, अंक–5, श्लोक–2

[v]- प्रतिमानाटकम् टीकाकार–ललिता प्रसाद, अंक–1, श्लोक–11

[vi]- प्रतिमानाटकम् टीकाकार–ललिता प्रसाद, अंक–1, श्लोक–23

[vii]- प्रतिमानाटकम् टीकाकार–ललिता प्रसाद, अंक–5, श्लोक–1